अनेकान्त के जीते–जागते उदाहरण

श्री खान

जयपुर ।। अग्रदूत

अणुव्रवत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के विद्वान शिष्य मुनि विनयकुमार जी आलोक के दीक्षा के 54वें वर्ष को अणुविभा केन्द्र में समस्त समाज व धर्मावलम्बियों के सानिध्य में आध्यात्मिक पर्व के साथ में मनाया गया जिसमें मुनि श्री ने साधुत्व व साधना के पथ पर विपरीत परिस्थितियों में भी सरलता, सहजता, सादगी एंव सहनशीलता से चलते रहने एवं भगवान महावीर के आगार और अनागार धर्म की व्याख्या की अर्थात साधु का कोई घर नही होता। साधु का कर्तव्य है कि वह स्वंय तरने तथा दूसरों को तारने की प्रेरणा देते रहे। मुनि आलोक जी ने कहा कि साधु धर्म में समर्पण साधना पथ एवं समझ के गुणों का होना परम आवश्यक है। साथ ही गुरू आज्ञा उसके लिये ब्रहम वाक्य होती है। गणाधिपति आचार्य तुलसी के आदेश पर प्रश्नोत्तर तत्व बोध के 1800 श्लोको 20 दिन में कंठस्थ करने का श्रेय प्राप्त किया। मुनि आलोक ने जीवन के 73वें वर्ष में 73000 किमी की यात्रा तो की है पर विशाल जनसम्पर्क करते हुए धर्मग्रन्थों का लेखन भी किया है।

मुनि आलोक ने अपने जीवन का उदाहरण देते हुए बताया कि साधु का निडर एवं निष्पक्ष होना परम आवश्यक है जिसके साथ विषम परिस्थिति में साधना के पथ पर आगे बढ़ता रहे। इस अवसर पर राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष एफ एम खान ने कहा कि सभी धर्म, मजहब व समुदाय का अन्तिम ध्येय एक है – जबकि उन्हें प्राप्त करने के रास्ते अलग–अलग है। उन्होने नवकार महामंत्र एवं वेदों की सूक्तियां, बाईबल के उदाहरणों, कुरान की आयतो एवं गुरूवाणी के दोहों को इंगित कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होने मुनि श्री को आलोक पुरूष बताया। समारोह में राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री इन्द्रसेन इसरानी ने कहा कि वर्तमान में जैन धर्म के अहिंसा एंव अनेकांतवाद के सिद्वान्तों की परम आवश्यकता है। पूर्व न्यायाधीश पाना चन्द जी जैन ने कहा कि दुनिया बारूद के ढेर पर बैठी है जिसका एकमात्र निदान अहिंसा है। मुनि श्री अहिंसा की अलख जगाये है। फादर विजय जोसफ ने कहा कि परमात्मा समान भाव से सब पर अनुकम्पा करता है। उन्होने मुनि श्री को बाईबल की प्रति श्रद्वापूर्वक भेंट की तथा बाईबल के साथ मुनि श्री की तुलना की। एम एन आइटी के निर्देशक श्री राजपाल दहिया ने कहा कि मुनि श्री ने पहली मुलाकात में ही मुझे अपना बना लिया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मुनि श्री ज्ञान के अखूट भण्डार है सौहार्द और मैत्री उनके भीतर कूट–कूट कर भरी है। उनके पास क्या जादू है कि आने वाला व्यक्ति उनका बन जाता है। उन्होने मुनि श्री को एम एन आइ टी में प्रवचन के लिये आमंत्रन भी दिया। श्री मानचन्द खण्डेला (डायरेक्टर एस आई एम सी एस) ने कहा मेरे जैसे प्रतिक्रियावादी को भी बदलने का यदि किसी को श्रेय जाता है तो मुनिश्री को। मुनिश्री की सहजता, सरलता और अपनापन सहज ही व्यक्ति को अपनी ओर खींचता है।

महामहोपाध्याय श्री विनय सागर जी ने कहा –"श्रमणत्व के प्रति मुनिश्री की निष्ठा देखकर मैं चकित हूं, आप श्री के व्यक्तित्व में भिन्नता है, विद्वता और विनम्रता का संगम है।

मुनिश्री अभयकुमार जी ने मुनिश्री के विभिन्न जीवन के पक्षों पर प्रकाश डाला। आज अणुविभा केन्द्र धर्म का संगम बन गया। मुनिश्री की दीक्षा के 54वें वर्ष प्रवेश पर कल से ही बधाई देने वालों का तांता लगा था और आज भी दिनभर बधाई देने वाले आते रहे। महिला मण्डल की सदस्याओं ने गीत प्रस्तुत किया। मुनिश्री गिरिश कुमार जी ने मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संयोजन श्रीमती सुमीता गंग ने किया।

अणुविभा केन्द्र